डर हमेशा आपको एक कैदी बना के रखेगा, खुले विचार आपको एक बादशाह बना के रखेंगे।

तेवर वही, अंदाज नया .....!
साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

डाक रजिस्ट्रेशन नं. मालवा डिवीजन-
L2/65/RNP/397/2024-2026

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

● वर्ष : 63, अंक : 30 ● उज्जैन, मंगलवार दिनांक 23-04-2024 से 29-04-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रोड शो कर उज्जैन-आलोट संसदीय मीडिया सेंटर का उद्घाटन किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन-आलोट क्षेत्र के प्रत्याशी अनिल फिरोजिया का नामांकन-पत्र दाखिल कराया

कांग्रेस के नेताओं ने तुष्टीकरण की राजनीति करते हुए दूरदर्शन के लोगों के भगवा कलर का भी विरोध कर दिया। भगवा ने पता नहीं क्या बिगड़ा है, कांग्रेस का। भगवा कलर से कांग्रेस को नफरत है। भगवा हमारे धर्म सत्ता का मार्ग प्रशस्त करती है। यह धर्म सत्ता के माध्यम से हमारी संस्कृति हमेशा विद्यमान रहती हैं।

जब जब अधर्म बड़ता है और धर्म की हानि होती है तो धर्म के लिए इसी प्रकार से कोई विचार का समुह निकलता है, जिसको कभी आप भाजपा कहते हो कभी राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ कहते हो या नाना प्रकार के राष्ट्रीयवादी नामों से हम सभी जानते हैं। मंदिर बन गया, लेकिन अब तक कांग्रेस के लोग भगवान श्रीराम के दर्शन करने तक नहीं गए। अब ये हमारी सनातन संस्कृति और भगवा पर आपत्ति उठाने का पाप भी कर रहे हैं। कांग्रेस के पापों का घड़ा भरा गया है। अब हमने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अपने सांस्कृतिक अनुष्ठान का महायज्ञ प्रारंभ किया है। उक्त बात मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने लोकसभा प्रत्याशी अनिल फिरोजिया के समर्थन में नामांकन रैली व रोड़ शो के बाद आमसभा को संबोधित करए हुए कही ।

उन्होंने कहा कि अंग्रेज चलते गए लेकिन कांग्रेस नहीं सुधरी कांग्रेस उसी मुकाम पर हैं। उनके शहजादे कहा हमारा गरीब परिवार से निकला व्यक्ति जिसने 51 साल तक कोई चुनाव नहीं लड़ा पूरा जीवन इस राष्ट्र कार्य के लिए दिया। ऐसे यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जिसका प्रत्यके दिन प्रत्येक क्षण राष्ट्र सेवा को समर्पित है। उन्होने कभी अवकाश नहीं लिया कोई परिवार नहीं बसाया कोई व्यक्तिगत उपभोग नहीं किया। स्वयं का अशियाना नहीं बनाया, 22 करोड़ लोगों को अपना मकान देने का संकल्प करते हैं। लेकिन खुद का मकान नहीं बनाते है। ऐसे पीएम का हम अभिनंदन करते हैं।

अब कहते फिर रहे हैं गरीबी दूर कर देंगे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने देश में लंबे समय तक राज किया एवं सरकार चलाई। हमेशा नारा देते रहे कि देश से गरीबी को दूर करेंगे, लेकिन वे गरीबी तो दूर नहीं कर सके अब तो हमारे देश की जनता ने ही उन्हें दूर कर दिया है। अब बेशर्मी से कहते हैं कि सरकार बनाओ, एक झटके में गरीबी दूर कर देंगे। कांग्रेस के झंडाबरदार जिनको लोग पप्पू जी कहते हैं और भी पता नहीं क्या-क्या नाम देते हैं। वे भी पदयात्रा करने निकले और बेशर्मी के साथ बोलते फिरे कि हमारी सरकार बनाओ एक झटके में गरीबी दूर कर देंगे। वे कहते हैं कि घर-घर से गरीबी दूर कर देंगे। गांधी परिवार ने 55 साल से अधिक समय तक सरकार चलाई और हमेशा नारा देते रहे कि देश से गरीबी दूर कर देंगे, लेकिन वे गरीबी दूर नहीं कर सके। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों ने कांग्रेस की सरकार धराशायी की थी, तब कांग्रेस की सीटें 115 रह गई। दूसरी बार 2019 में केवल एक बस (52 सीटर) की सवारी रह गई। इस बार तो इनकी टैम्पों की सवारी रह जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमने अपने सांस्कृतिक अनुष्ठान का महायज्ञ प्रारम्भ किया है। हमारी पंच निष्ठांओं में हमने कहा है कि एक-एक निष्ठा से इस देश की संस्कृति को खड़ा करना चाहते हैं। अब दुनिया में कहीं भी केवल ये बताना है कि हम श्रीराम, श्रीकृष्ण की धरती से आए हैं, वो समझ जाएंगे कि भारत से आए हैं। मोदी जी ने नई शिक्षा नीति में भारत के गौरवशाली इतिहास के पृष्ठों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया। भारतीय जनता पार्टी विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है। पार्टी के संस्थानपकों ने उदात्त विचारों के साथ अपने कार्यकर्ताओं की चिंता की और जड़ों से जुड़कर सिद्धांत बनाए।

बूढ़े जब ज्यादा बात करते हैं तो लोग सठियाने का ताना मारते है

बूढ़े जब ज्यादा बात करते हैं तो लोग सठियाने का ताना मारते हैं, लेकिन डॉक्टर इसे वरदान मानते हैं। डॉक्टर कहते हैं कि सेवानिवृत्त (वरिष्ठ नागरिकों) को अधिक बात करनी चाहिए क्योंकि वर्तमान में स्मृति हानि को रोकने का कोई उपाय नहीं है। अधिक बात करना ही एकमात्र तरीका है। वरिष्ठ नागरिकों को ज्यादा बात करने से कम से कम तीन फायदे हैं।

पहला-बोलना मस्तिष्क को सक्रिय करता है और मस्तिष्क को सक्रिय रखता है, क्योंकि भाषा और विचार एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं, खासकर जब जल्दी-जल्दी बोलते हैं, जो स्वाभाविक रूप से तेजी से सोच प्रतिबिंब में परिणाम देता है और स्मृति को भी बढ़ाता है। वरिष्ठ नागरिक जो बात नहीं करते हैं, उनकी याददाश्त कम होने की संभावना अधिक होती है।

दूसरा-ज्यादा बोलने से तनाव दूर होता है, मानसिक बीमारी से बचा जाता है और तनाव कम होता है। हम अक्सर कुछ नहीं कहते, लेकिन हम इसे अपने दिलों में दबा लेते हैं और घुटन और असहज महसूस करते हैं। यह सच है, इसलिए, अच्छा होगा कि सीनियर्स को ज्यादा बात करने का मौका दिया जाए।

तीसरा-बोलने से चेहरे की सक्रिय मांसपेशियों का व्यायाम हो सकता है और साथ ही गले का व्यायाम हो सकता है और फेफड़ों की क्षमता भी बढ़ सकती है, साथ ही यह आंखों और कानों के खराब होने के जोखिम को कम करता है और गुप्त जोखिमों को कम करता है जैसे कि चक्कर आना, घुमनी और बहरापन। संक्षेप में, सेवानिवृत्त, यानी वरिष्ठ नागरिक, अल्जाइमर को रोकने का एकमात्र तरीका है कि जितना हो सके बात करें और लोगों के साथ सक्रिय रूप से संवाद करें। इसका कोई दूसरा इलाज नहीं है।

● संकलन-मनमोहन शर्मा

सम्पादकीय

जेल की चारदीवारी में पकवान

केजरीवाल मधुमेह के मरीज हैं और उन्हें रोजाना इंसुलिन लेनी पड़ती है। उनका कहना है कि उन्हें अपने चिकित्सक से परामर्श करने की इजाजत दी जाए। निश्चित रूप से वे जिस पद और कद के व्यक्ति हैं और यों भी उनकी सेहत के लिहाज से चिकित्सीय परामर्श की सुविधा मिलनी चाहिए। मगर एक पहलू यह भी है कि जेल में रहते हुए उन्हें जैसा भोजन मिल रहा है, वैसा किसी अन्य कैदी को शायद ही मिलता हो। बहरहाल, बेहतर हो कि अरविंद केजरीवाल जिस आरोप में सलाखों के पीछे हैं, सुनवाई और बहस का केंद्र वह हो, न कि उनका खानपान मुख्य मुद्दा बने। अजीब है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को लेकर चर्चा का मुख्य बिंदु यह हो गया है कि वे अपने भोजन में क्या-क्या और क्यों खा रहे हैं! हालत यह है कि अदालत में मुकदमे के समांतर उनके खानपान को लेकर बहस हो रही है। एक ओर प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी का कहना है कि केजरीवाल जेल में जानबूझ कर ऐसा खाना खा रहे हैं, जिससे उनके शरीर में शर्करा का स्तर बढ़ जाए, और बीमारी के बहाने वे जमानत पर जेल से बाहर निकल आएं।

केजरीवाल ने अदालत में ईडी के दावों को खंडन किया कि वे रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ाने के लिए आम और मिठाई नहीं खा रहे हैं। इस मसले पर खींचतान का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अब सफाई के तौर पर कहा जा रहा है कि केजरीवाल के घर से अड़तालीस बार खाना आया, उसमें केवल तीन बार आम आए थे।

जाहिर है, इस बात का हिसाब रखा, देखा और परखा जा रहा है कि कितनी बार और क्या-क्या खाना आया और उसका शरीर पर क्या असर हो सकता है। कभी जेल की चारदीवारी के भीतर आलू-पूड़ी, तो कभी आम या मिठाई खाना या वजन बढ़ना या फिर चिकित्सक की निर्धारित सूची से अलग भोजन करना मुद्दा बन रहा है। ईडी की यह दलील भी हैरान करती है कि केजरीवाल कुछ खास चीजें खाकर अपने शरीर में किसी ज्यादा बड़ी दिक्कत को न्योता दे रहे हैं, ताकि उन्हें जमानत मिल जाए!

हार के डर से विपक्ष का ईवीएम प्रलाप

मोदी विरोधी मोर्चा के नेता आजकल एक और कैंपेन कर रहे हैं। वो कह रहे हैं कि मोदी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की वजह से जीतते हैं। वैसे ईवीएम को गलत ठहराने वाला राग तो पुराना है। 17 अप्रैल को कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में चुनाव प्रचार के दौरान दावा किया कि अगर ईवीएम से छेड़छाड़ न हो तो भाजपा 180 सीटों पर सिमट जाएगी। जो राजनीतिक दल और नेता पिछले पांच साल तक जमीन पर उतरे नहीं, आज जब उन्हें अपनी हार साफ तौर पर दिख रही है तो उन्होंने ईवीएम की हार में पेशबंदी शुरू कर दी है। आखिरकार अपनी गलतियों, कमियां और कमजोरियों का ठीकरा किसी के सिर तो फोड़ना ही है, ऐसे में बेजुबान ईवीएम से बेहतर विकल्प कोई दूसरा नहीं हो सकता। देश में आम चुनाव के पहले चरण की 102 लोकसभा सीटों पर 19 अप्रैल को मतदान हो चुका है। करोड़ों देशवासियों ने उन्हीं ईवीएम का बटन दबाकर अपना वोट दिया है, जिन पर अधिकतर विपक्षी दल प्रलाप कर रहे हैं।

वे दल चुनावी दौड़ में शामिल हैं, उनके सांसद और विधायक चुने जाने हैं, लेकिन वे ईवीएम पर अब भी संदेह कर रहे हैं। ईवीएम की शुरुआत कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार के ही कार्यकाल में हुई थी। 2004 के उस दौर से लेकर आज तक करीब 340 करोड़ मतदाता अपने संवैधानिक मताधिकार का प्रयोग कर चुके हैं और चार लोकसभा चुनाव ईवीएम के जरिए सम्पन्न कराए जा चुके हैं। 26 विधानसभा चुनाव और एक लोकसभा चुनाव में वीवीपैट पर्ची का भी इस्तेमाल किया जा चुका है।

इसी ईवीएम के दम पर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में तीन बार और पंजाब में एक बार चुनाव जीता। 2012 में समाजवादी पार्टी को उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत मिला। बहुजन समाज पार्टी को 2007 में उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत मिला और कांग्रेस ने 2023 में तेलंगाना जीता। 2018 के विधानसभा चुनाव में राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में कांग्रेस सत्तारूढ़ हुई थी। तब भी मतदान ईवीएम के जरिए ही हुआ था। वर्तमान में तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना और पंजाब आदि राज्यों में गैर-भाजपा दलों की सरकारें हैं, जो ईवीएम के जरिए ही सत्तासीन हुई हैं। अगर विपक्ष को लगता है कि ईवीएम में हेरफेर किया गया है, तो वो प्रचार करने ही क्यों जाता है? विपक्ष उन राज्यों में चयनात्मक आलोचना करता है, जहां वो चुनाव हार जाता है। असल में विपक्ष को अपनी हार को स्वीकार करने और समझने की जरूरत है।

ईवीएम को लेकर अकसर प्रलाप मचाया जाता है और चुनाव आयोग को भी कठघरे में खड़ा किया जाता रहा है, यह प्रवृत्ति दुराग्रह पूर्ण है। आयोग ने ईवीएम को हैक करने या उसके सिस्टम से छेड़छाड़ करने के मद्देनजर सभी राजनीतिक दलों को आमंत्रित किया था, कुछ दल गए भी, लेकिन कोई भी आपत्ति नहीं उठा सका या गड़बड़ी को साबित नहीं कर सका। एक बार फिर यह मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन है। दो न्यायाधीशों की खंडपीठ ने निर्णय सुरक्षित रखा है। वास्तव में प्रश्न यह है कि विपक्ष का चरित्र इतना दोगला क्यों है? संवैधानिक व्यवस्था के ही विरुद्ध क्यों है? ईवीएम का प्रयोग छोड़कर बैलेट वाले मतदान के पाषाणकाल की ओर लौटना क्यों चाहता है? हालांकि बूथ छापने, लूटने और फर्जी मतदान के उस दौर को सर्वोच्च न्यायालय पृथक कर चुका है। साल 2009 के आम चुनाव में जब भाजपा के नेता ईवीएम पर सवाल उठा रहे थे, ठीक उसी वक्त ओडिशा कांग्रेस के नेता जेबी पटनायक ने भी राज्य विधानसभा में बीजू जनता दल की जीत की वजह ईवीएम को ठहराया था। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद कांग्रेस के नेता और असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने भी ईवीएम पर सवाल उठाए थे और कहा था कि भाजपा की जीत की वजह ईवीएम है। ऐसे में ये कहा जा सकता है कि भारत में जब तक पार्टियां चुनाव नहीं हारने लगतीं तब तक उन्हें ईवीएम मशीन से कोई शिकायत नहीं होती। मौजूदा समय में भारत का प्रत्येक राजनीतिक दल कभी न कभी ईवीएम का विरोध कर चुका है। ऐसे में संसद की संयुक्त संसदीय समिति को ईवीएम के इस्तेमाल की जांच करनी चाहिए। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, एक आम चुनाव में 55 लाख से अधिक ईवीएम का प्रयोग किया जाता है और करीब 1.5 करोड़ चुनावकर्मी मतदान प्रक्रिया में हिस्सा लेते हैं। सभी एक विशेष पार्टी के पक्षधर हो जाएं या ईवीएम का प्रोग्राम एक ही पार्टी के पक्ष में तय कर दिया जाए और इतने चुनावकर्मी एक साथ 'भ्रष्ट' हो जाएं, यह बिल्कुल भी संभव नहीं है। ईवीएम किसी लैपटॉप, कम्प्यूटर अथवा इंटरनेट नेटवर्क से जुड़ी हुई नहीं है, उसे हैक करना या छेड़छाड़ करना भी संभव नहीं है, अलबत्ता मशीन में तकनीकी खराबी जरूर आ सकती है। उस स्थिति में ईवीएम बदलने की पारदर्शी व्यवस्था है। वैसे चुनाव आयोग समय-समय पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन को आधुनिक बनाने की दिशा में काम करता रहा है। चुनाव आयोग ने अदालत में अपना समूचा पक्ष रखा है। वीवीपैट पर्ची और वोटिंग के आपसी मिलान पर भी स्पष्टीकरण दिया है। पर्ची सात सेकंड के लिए दिखती है। उसके बाद पर्ची मशीन में ही चली जाती है। न्यायिक पीठ को बताया गया कि पर्ची को मतदाता को देना जोखिम का काम है।

इससे गोपनीयता भंग हो सकती है और बाहर निकालने पर पर्ची का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। याचिकाकर्ता एडीआर ने मतदान और पर्ची की 100 फीसदी क्रॉस चेकिंग की मांग की है। न्यायिक पीठ के सामने चुनाव आयोग ने खुलासा किया कि चार करोड़ ईवीएम वोट और वीवीपैट पर्चियों के मिलान कराए गए हैं। बहरहाल अदालती फैसले की प्रतीक्षा है। अब चुनाव की निष्पक्षता, ईमानदारी बरकरार रहे, मतदाताओं के जेहन में लेशमात्र भी संदेह नहीं होना चाहिए और आयोग की संवैधानिक स्वायत्तता भी बनी रहे, उस संदर्भ में अदालत को निर्णय देना है। वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल यानी वीवीपैट से निकलने वाली सभी पर्चियों का मिलान इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) से पड़े वोटों के साथ कराने की मांग वाली याचिका पर पिछले मंगलवार को सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की बेंच ने एडीआर की याचिका पर सुनवाई के दौरान 1960 के दशक में बैलेट पेपर से चुनाव के दौर को याद किया और कहा कि देश में फिलहाल मतदाताओं की संख्या 96 करोड़ से अधिक है।

आधुनिक भारत के निमार्ताओं के सपने साकार करने के लिए समाज के लोगों को आगे आना होगा

भारतीय राजनीति में जाति की बड़ी अहमियत है। हालांकि अधिकांश महापुरुष जाति विहीन भारत के निर्माण के पक्ष में थे। वे जातिवाद को बेहद खतरनाक मानते थे और कई मौकों पर यह बात उन्होंने कही भी। जाति तोड़ो अभियानों में वे निरंतर जुटे रहे लेकिन जाति की जड़ों को हिला नहीं पाए। इसकी वजह यह रही कि उस समय जातियों का उभार तत्कालीन राजनीति कर रही थी। धीरे-धीरे यह जातीय उभार राजनीतिक गुटों, गिरोहों और वर्गों की शक्ल लेता गया और गांधी, लोहिया तथा अंबेडकर के सपने धराशायी हो गए।

आज भारत की राजनीति में जाति सम्मेलनों की बहुलता बढ़ी है। वर्गों का आधिपत्य बढ़ा है। सभी जातियों-वर्गों के अपने नेता हैं । वह जातीय सम्मेलन करते हैं। सत्तारूढ़ दलों के नेता भी अपने स्तर पर जातीय उभार को मजबूती देते हैं। राजनीति दलों के बॉयलॉज की बात करें तो उसमें एक बात समान होती है कि राजनीतिक दल सर्व समाज के लिए बिना किसी भेदभाव के समान अवसर उपलब्ध कराने के काम करेंगे। जाति नहीं देखेंगे। चुनाव में जाति की बात नहीं करेंगे, मगर विधानसभाओं, विधान परिषद, राज्यसभा के चुनाव में जाति वर्ग के कई चरण मंथन- चिंतन की जातीय इंजीनियरिंग को प्राथमिकता दी जाती है। बात यहीं नही समाप्त होती, यह धर्म और पंथ तक जाती है।

समता मूलक समाज की स्थापना की नकली रस्मों ने भी भारत का बड़ा अहित किया है। यहाँ वोट का गणित है। योग्यता-मेधा नहीं है। जातियों के नाम पर पार्टियां हैं। सभी जातियों की अपनी अपनी पार्टियां हैं। अपने-अपने महापुरुष हैं। उनकी मूर्तियों को लगाने की होड़ है। पार्कों को बनवाने के लिए प्रबल माँगें हैं। इतना ही नहीं, प्राचीन भारत के गौरवशाली इतिहास पुरुषों, शासकों को अपनी जाति बताने में गर्व होता है। राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों के पोस्टर बैनर, लेटर हेड में अपनी जाति के महापुरुषों के चित्रों को लगाने का फैशन बढ़ा है। सरकारों के बदलने पर अपनी जाति वर्ग के विचारों वाले महापुरुषों व्यक्तियों की मूर्तियां लगाने, पार्क बनाने का काम पहले से ही जोरों पर है। इसमें खास बात यह है कि यह मूर्तियां लगाने और पार्क बनाने का काम जनता के धन से ही बड़ी सरलता से संपन्न होता है।

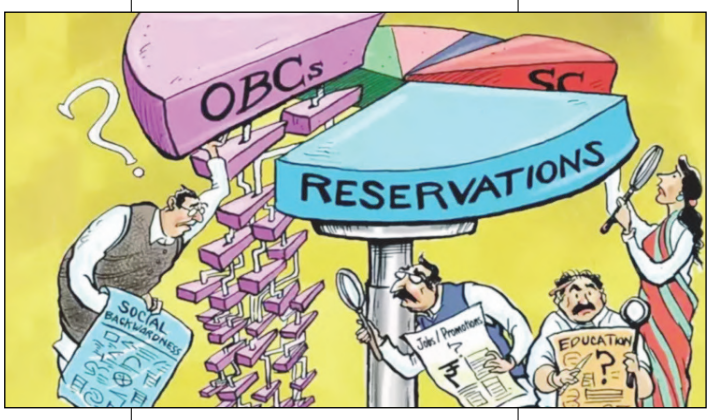

देश में लोकसभा चुनाव का तापमान मौसम के साथ बढ़ता जा रहा है। गांव-गांव, नगर-नगर जातियों के नेता सक्रिय हैं। दलों के प्रभारी भी जाति देखकर राष्ट्रीय, प्रदेशीय व जनपदों में बनाए जा जाते हैं। टिकट बंटवारे में राजनीति का मूल तत्व जाति ही है। टीवी पर भारी बहसें होती हैं। जाति के इस व्यक्ति या उस व्यक्ति के टिकट मिलने या मिलने पर, ऐसे में जाति विहीन राजनीति की बातें बेमानी है। समता, ममता और सामाजिक एकता के दावे भी फर्जी हैं। सबको साथ लेकर चलने की पंचायतें हैं, मगर जातियों की पंचायतें तय कर रही हैं कि मेरी जाति का प्रतिनिधित्व बढ़ाया जाए। लोकसभा चुनाव में टिकट वितरण में सभी राजनीतिक दलों में जातियों को लेकर गला काट प्रतिस्पर्धा है। जातिवादी, गुटों वर्गों द्वारा लगातार दलों को धमकी दी जा रही है। जातियों के अति सक्रिय होने से वे जातियां भी पीड़ित अपमानित महसूस करती हैं जिनकी संख्या कम है। वहीं अनेक जातियां उल्लसित हैं कि मेरी जाति की संख्या ज्यादा है।

टीवी चैनल भी दलों के पक्ष में जाति आधारित वक्तव्य झगड़े की स्थिति तक दोहराते नहीं थकते हैं लेकिन मूल प्रश्न अनुत्तरित है कि क्या भारत में अति सक्रिय जातिवादी ही सबसे बड़े लोकतंत्र के ठेकेदार हैं? तब उनका क्या होगा जो जातिवादी नहीं हैं।

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने जाति तोड़ो अभियान चलाया था। डॉक्टर लोहिया मानते थे कि जाति प्रथा के ऊपर सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक हमला होना चाहिए, जिससे एक दृढ़ समाज बने । दृढ़ और मजबूत समाज के लिए जनता की उदासीनता देश के प्रति खत्म होनी चाहिए। महात्मा गांधी के बाद देश में जाति तोड़ो अभियान की अगुवाई डॉ. लोहिया ही कर रहे थे। डॉ. लोहिया के विचार खासकर आज के राजनीतिक वातावरण में विशेषतः प्रासंगिक हैं । लोहिया ने कहा कि राजनीति बुराई से लड़ती है इसलिए लड़ो।

गांधी ने अपनी पुस्तक सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा के अध्याय 12 के पेज नंबर 35 पर लिखा कि मेरे विलायत जाने की बात पर जाति में खलबली मच गई। कहा कि अभी तक कोई मोढ़ बनिया विलायत नहीं गया। जातीय सभा बुलाई गई। मुझे जाति सभा में बुलाया गया। कहा गया कि जाति का ख्याल है कि विलायत (विदेश) जाना ठीक नहीं। हमारे धर्म में समुद्र पार करने की मनाही है। गांधी ने कहा कि मैंने माताजी और भाई से अनुमति प्राप्त की है। सरपंच ने कहा तू जाति का हुक्म नहीं मानेगा। गांधी ने कहा जाति को दखल नहीं देनी चाहिए। सरपंच गुस्सा गए। सरपंच ने आदेश दिया कि यह लड़का 'गांधी' आज से जाति च्युत माना जाएगा। महात्मा गांधी पर जाति के निर्णय थोपने के प्रयास हुए । गांधी को भी जाति के खाँचे में रखने के प्रयास हुए। बाद में वे विदेश जा पाए।

डॉ आंबेडकर का विचार था कि जाति प्रथा से लड़ने के लिए चारों तरफ से प्रहार करना होगा। यह ईंट की दीवार जैसी कोई भौतिक वस्तु नहीं है। यह एक विचार है। अंबेडकर ने सवाल उठाया कि हमारे देश को बार-बार आजादी क्यों खोनी पड़ी। क्यों हम इतनी बार विदेशियों के अधीन हुए। कारण यह था कि हमारा सारा देश हमले के खिलाफ खड़ा नहीं हो सका। हमेशा एक छोटे से वर्ग ने मुकाबला किया और यह पराजित हो गया तो सारा देश विजेता के कदमों पर झुक गया। यह मुख्यतः हिंदुओं की जाति प्रथा के कारण हुआ है। बाबा साहब अंबेडकर एक चिंतन (मधु लिमये) की पुस्तक पृष्ठ संख्या 31 । स्वामी दयानंद ने जाति प्रथा की विकृति छुआछूत या अस्पृश्यता की प्रथा पर तीखा प्रहार किया। कहा कि यह प्रथा अनुचित और अमानवीय है, बल्कि यह वैदिक धर्म के विरुद्ध भी है। स्वामी दयानंद ने जिस राज्य व्यवस्था का समर्थन किया है, वह धर्म तंत्र नहीं है। वह कल्याणकारी राज्य है। इसमें धर्म और नैतिकता की रक्षा के साथ सार्वजनिक शिक्षा के प्रबंध आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि न्याय सत्य पर आधारित राजनीति के प्रति गहरा लगाव मूल्यवान है। लोकमान्य तिलक ने अस्पृश्यता की अमानवीय प्रथा का विरोध किया। जात-पांत पर आधारित भेदभाव की निंदा की। वे भारत में सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप सच्चा समाज सुधार लाना चाहते थे। भारतीय समाज में परिवर्तन चाहते थे।

जिस समय भारत के यह सभी महापुरुष जाति उन्मूलन के लिए लगातार आंदोलनरत थे उस समय आधुनिक भारत उदय हो रहा था। गांधी, अंबेडकर, लोहिया, अरविंद घोष, लाला लाजपत राय, सुभाषचन्द्र बोस ने यह न सोचा होगा कि हमारा भारत अगले कुछ दशकों में राजनीति का संचालन जाति को प्राथमिकता देकर करेगा। आज जाति, धर्म, पंथ सर्वोच्च विषय लेकर लोकसभा चुनाव हो रहे हैं।

यह आहत करने वाली बात है। राजनीतिक दल, सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता, प्रबुद्ध जन जब तक चुनाव में जाति विहीनता के लिए अभियान नहीं चलाएंगे तब तक जातीय संगठन, जातीय पंचायतें, जातिवादी राजनीतिज्ञ जाति के नाम पर सत्ता की मलाई खाते रहेंगे। उपेक्षित होंगी प्रतिभाएं। चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र की हों या किसान, मजदूर, नौजवान महिलाएं हों।

आधुनिक भारत के निमार्ताओं के सपने साकार करने के लिए समाज के लोगों को आगे आना होगा। इस गंभीर समस्या पर विचार करना होगा। हमारे सभी कार्य के पीछे विचार मूल स्रोत होता है। अच्छे विचार के बीज ही महान कार्यों को संपन्न करते हैं। सुंदर विचारों को हम उनकी स्वाभाविक गति में चलने दें तो परिवर्तन निश्चित ही आता है। विचारों की शक्ति अपार होती है। विचारों की चेतना के साथ हम सब आगे आएं। समतामूलक समाज की स्थापना के लिये अगुवाई करें।

इंदौर में बड़ी वारदात करने की फिराक में था लॉरेंस बिश्नोई गैंग?

इंदौर। इंदौर क्राइम ब्रांच ने लॉरेंस बिश्नोई गैंग के तीन शार्प शूटरों को गिरफ्तार किया है। आरोपी पंजाब में रहकर कई बड़े अपराध कर चुके हैं। आरोपियों के पास से अवैध देशी पिस्तौल सहित कारतूस बरामद हुए हैं। आरोपी इंदौर क्यों आए थे? क्या तीनों किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में थे, पुलिस इस बारे में छानबीन कर रही है। आरोपियों के अमृतसर पंजाब में कई आपराधिक रिकॉर्ड भी है। इंदौर क्राइम ब्रांच एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि देर रात इंदौर क्राइम ब्रांच को सूचना मिली थी कि पंजाब से आए तीन बदमाश अवैध हथियारों के साथ इंदौर में घूम रहे हैं। इसके बाद क्राइम ब्रांच की टीम एक्टिव हुई और तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों के पास बड़ी मात्रा में अवैध हथियार बरामद हुए हैं। आरोपी छोटी ग्वालटोली इलाके के एक होटल में ठहरे थे। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। आरोपी लॉरेंस बिश्नोई गैंग के शूटर बताए जाते हैं। तीनों आरोपी लॉरेंस बिश्नोई गैंग के लिए सुपारी लेकर वारदात को अंजाम देते रहे हैं। आरोपियों के नाम रश्मि उर्फ रिशु निवासी अमृतसर, शिवम उर्फ बबलू निवासी मुजफ्फराबाद और पुनीत निवासी अमृतसर लॉरेंस बिश्नोई गैंग से संबंध रखते हैं। रश्मि उर्फ रिशु लॉरेंस बिश्नोई गैंग के खास शूटर जग्गू भगवान पुरिया का खास गुर्गा बताया जाता है। रिशु कई वारदातों को अंजाम दे चुका है। गैंग का एक अन्य सदस्य शुभम अमृतसर जेल में बंद है। बताया जाता है कि उसके साथ रिशु के पुराने तालुका हैं। शुभम 2016 से जेल में बंद है। वह तब चर्चा में आया जब उसने दूसरी गैंग के सिमरन के पिता की हत्या की थी।

क्या कांग्रेस अपने झंडे से भगवा रंग हटाने की हिम्मत करेगी?-मुख्यमंत्री

भोपाल। दूरदर्शन न्यूज (डीडी न्यूज) के 'लोगो' का रंग बदले जाने पर विपक्षी दलों की आपत्तियों के बीच मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कांग्रेस से सवाल किया कि क्या वह अपने झंडे से 'भगवा' रंग हटाने की हिम्मत करेगी।

मोहन यादव ने एक बयान में कहा कि वामपंथी और विपक्षी दल यह नहीं समझते कि भगवा त्याग का प्रतीक है और सूर्य संस्कृति का वाहक है। दरअसल, सरकारी समाचार चैनल 'दूरदर्शन न्यूज' के 'लोगो' का रंग लाल से नारंगी (रंग) करने पर राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। विपक्ष ने इसे पूरी तरह से अवैध बताया है।

विपक्षी दलों के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए सीएम मोहन यादव ने रविवार को कहा, ''कांग्रेस क्या चाहती है? वामपंथी और विपक्षी दल यह नहीं समझते कि भगवा हमारे त्याग और वैराग्य का प्रतीक है। अब अगर

भगवा का इतना ही विरोध है तो क्या कांग्रेस अपने झंडे से यह रंग हटाने की हिम्मत करेगी? उन्होंने विपक्षी दलों पर संपूर्ण सनातन और हिंदू संस्कृति का अपमान करने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'लोगो' के रंग में बदलाव को लेकर कांग्रेस और वामपंथियों के बयानों से हंसी आती है और गुस्सा भी आता है। विपक्षी दलों ने 'लोगो' के रंग में बदलाव किए जाने की आलोचना की है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इसे चुनाव के दौरान दूरदर्शन के भगवाकरण का प्रयास करार दिया है। वहीं, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मनीष तिवारी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि पूर्व केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री के रूप में, मैं चाहता हूं कि प्रसार भारती 'लोगो' का रंग बदलने के बजाय सार्वजनिक प्रसारक की सामग्री को बेहतर बनाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करे।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एवं द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के अध्यक्ष एम.के. स्टालिन ने दूरदर्शन के 'लोगो' का रंग बदलने की आलोचना करते हुए कहा कि यह हर चीज का भगवाकरण करने की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की 'साजिश' की शुरुआत है।

मुख्यमंत्री के रोड शो में टूट गया मंच

छतरपुर। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ हादसा होते-होते बच गया। छतरपुर में एक जनसभा को संबोधित करने के दौरान सीएम का मंच टूट गया।

इस दौरान वो लड़खड़ाकर गिरने लगे, तभी उनके सुरक्षाकर्मियों और केंद्रीय मंत्री ने उन्हें संभाल लिया। मंच पर ज्यादा भीड़ होने के कारण टूट गया था, जिससे डॉ. मोहन यादव का बैलेंस बिगड़ गया था। इस घटना में सीएम को कोई चोट नहीं आई है। सीएम पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

दरअसल मुख्यमंत्री मोहन यादव यादव केंद्रीय मंत्री और टीकमगढ़ लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी वीरेंद्र खटीक के पक्ष में एक रोड शो करने के लिए आए हुए थे। शहर के डाकखाने चौराहे पर सदर विधायक ललिता यादव ने उनके स्वागत के लिए एक मंच तैयार किया था। इस मंच पर भाजपा के कार्यकर्ता और अन्य लोग भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री मोहन यादव और केंद्रीय मंत्री वीरेंद्र खटीक जैसे ही मंच पर पहुंचे, अचानक भीड़ बढ़ने लगी और मंच से टूट गया। मंच टूटने के बाद सीएम मोहन यादव लड़खड़ा गए। हालांकि, सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें संभाल लिया।

सीएम मोहन यादव मंच से ही बार-बार यह कह रहे थे कि भीड़ ज्यादा है, कहीं ऐसा न हो की मंच टूट जाए। कुछ देर भाषण देने के बाद हुआ भी वही। अचानक से मंच टूट गया और सीएम मोहन यादव लड़खड़ाकर गिरते-गिरते बचे। उनके साथ बड़ा हादसा होते-होते टल गया। रोड शो के दौरान मंच टूटने के बाद सीएम मोहन यादव वहां से अपने रथ की तरफ लौट गए। जिस जगह पर सीएम मोहन यादव खड़े थे ठीक उसी जगह से मंच टूटा। गनीमत ये रही की तुरंत सुरक्षाकर्मियों और केंद्रीय मंत्री वीरेंद्र कुमार खटीक ने उन्हे संभाल लिया और अप्रिय घटना होने से टल गई। इस घटना में सीएम मोहन यादव को चोट नहीं लगी है।

फेरे लिए और मांग भरी, फिर दुल्हन को छोड़ गया दूल्हा

खरगोन। खरगोन में एक शादी समारोह में उस समय मासूसी छा गई, जब दूल्हे ने दुल्हन संग फेरे लेने और मांग भरने के बाद अचानक लग्न वेदी को लात मार दी। इसके बाद दूल्हा दुल्हन को छोड़ कर चला गया और बारात भी खाली हाथ लौट गई। शनिवार देर रात हुए घानाक्रम के बाद बैंक्वेट हॉल में हंगामे की स्थिति बन गई। दुल्हन पक्ष ने दूल्हा पक्ष पर दहेज में 20 लाख रुपये मांगने का आरोप लगाया है। बात यहीं खत्म नहीं हुई देर रात दुल्हन पक्ष ने शहर कोतवाली पहुंचकर दूल्हे सहित उसके पिता व अन्य लोगों को खिलाफ दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज करवाया है। इस सदमे से बेहोश हुई दुल्हन को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। खंडवा निवासी दुल्हन की मां रेखा मंडलोई ने बताया कि उनकी बेटी रक्षा का विवाह खरगोन निवासी आनंद गराशे से तय हुआ था। करीब दो साल पहले सगाई हुई थी। दोनों की शादी शहर के नूतन नगर स्थित बैंक्वेट हॉल में हो रही थी। इसमें शादी के बाद लगन के समय दूल्हे आनंद गराशे और उसके पिता कसल गराशे, बलराम गराशे, श्याम गराशे, भरत गराशे ने दहेज के रूप में 20 लाख रुपये देने की मांग की, जो हम नहीं दे सके। इस पर पहले दूल्हे के परिजन कार्यक्रम स्थल से चले गए। बाद में उन्होंने दूल्हे को मोबाइल फोन पर कॉल किया। इस पर दूल्हे आनंद ने फेरे लेने और दुल्हन की मांग भरने के बाद तलवार निकाली और लग्न वेदी को लात मारी और वह भी शादी छोड़ कर चला गया।

दुल्हन पक्ष ने किया विवाद

दूल्हे के भाई भरत गराशे ने बताया कि हमने दहेज की मांग पूरी नहीं की है। हमारे बीच पहले तय हुआ था कि कुछ लोगों को शादी में नहीं बुलाना है, बावजूद इसके दुल्हन पक्ष ने उन लोगों को शादी में बुलाया। इस पर दूल्हा स्टेज पर नहीं बैठना चाहता था, लेकिन दुल्हन के मामा पक्ष ने दूल्हे के साथ विवाद किया और अपशब्द भी कहे।

दुल्हन के परिजनों ने बताया कि पहले हमने दूल्हा पक्ष को खंडवा बारात लाने के लिए कहा था, लेकिन उन्होंने हमें खरगोन बुलवाया। उनकी मांग अनुसार हमने कर्ज लेकर बैंक्वेट हॉल, दावत और दहेज के सामान की व्यवस्था की थी। शादी हो जाने के बाद अचानक दूल्हे के पिता, ताऊ और अन्य परिजनों ने 20 लाख रुपए की मांग करने लगे, जो हम पूरी नहीं कर पाए। इस पर वे लोग शादी समारोह छोड़कर चले गए। विवाद होने से पहले उन्होंने सारे कैमरे बंद करवा दिए थे। इस पर शनिवार देर रात को थाने पहुंच कर रिपोर्ट दर्ज करवाई।

बेहोश हुई दुल्हन

शादी समारोह में हुए हंगामे के बाद दुल्हन रक्षा मंडलोई बेहोश हो गई। उसे देर रात जिला अस्पताल में भर्ती किया गया। रविवार सुबह भी अस्पताल में हंगामे की स्थिति बनी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दूल्हा व उसके साथ महिलाएं अस्पताल आई थीं। दूल्हे ने बदहवास हाल दुल्हन रक्षा का हाथ पकड़ा और महिलाओं ने हंगामा किया। वे समझौता करने का

दबाव बना रहे थे।

इधर कोतवाली थाना प्रभारी बीएल मंडलोई ने बताया कि दुल्हन पक्ष की शिकायत पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। फिलहाल मामले की विवेचना की जा रही है।

कक्षा 5वीं-8वीं बोर्ड पैटर्न परीक्षा परिणाम 23 अप्रैल को

भोपाल। मध्यप्रदेश में कक्षा 5वीं और 8वीं बोर्ड पैटर्न परीक्षा परिणाम 23 अप्रैल को घोषित किया जायेगा। आधिकारिक जानकारी के अनुसार परीक्षा परिणाम की घोषणा भोपाल के अरेरा हिल्स स्थित स्कूल शिक्षा विभाग के राज्य शिक्षा केन्द्र सभागार में की जायेगी। बोर्ड पैटर्न परीक्षा में करीब 24 लाख बच्चे शामिल हुए थे। इनमें कक्षा-5 के 12 लाख 35 हजार के करीब और कक्षा-8 के 11 लाख 37 हजार के करीब बच्चे शामिल हैं। प्रारंभिक स्तर पर बोर्ड पैटर्न परीक्षा आयोजित करने वाला मध्यप्रदेश देशभर में अग्रणी राज्य के रूप में पहचाना जाता है। परीक्षा परिणाम दोपहर 12.30 बजे से वेबसाइट पर देखा जा सकेगा।

प्रेग्नेंट पत्नी का सिर दीवार से मारा, फिर बच्चों के सामने पेट में घोंप दिया चाकू

इंदौर। बताया जा रहा है कि देर रात एक पति ने अपनी पत्नी की चाकू मार कर हत्या कर दी। इतना ही नहीं आरोपी ने घटना के वक्त अपने बच्चों के सामने ही पत्नी का सिर को दीवार पर दे मारा था। इसके बाद आरोपी पति पत्नी को अस्पताल लेकर गया था। तब डॉक्टर ने पत्नी की पेट पर चाकू के निशान देखे और पुलिस को मामले की जानकारी दी गई। पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया। पत्नी गर्भवती थी और दोनों का पैसों को लेकर विवाद हुआ था।

एडिशनल डीसीपी आनंद यादव ने बताया कि थाना क्षेत्र के सहयोग नगर में रहने वाले उमेश राठौर सोमवार रात अपनी पत्नी शारदा को जिला अस्पताल में इलाज के लिए ले गया। यहां पर उमेश ने डॉक्टर को बताया कि खाना बनाते समय शारदा किचन में गिर गई थी और वहां पर चाकू रखा हुआ था जो उसके पेट में लग गया जिसके बाद डॉक्टरों ने घाव देखकर पुलिस को सूचना दी कि यह हादसा नहीं यह हत्या है। इसके बाद पुलिस ने आरोपी उमेश राठौर को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने आरोपी उमेश राठौर से जब सख्ती से पूछताछ की तो उसने बताया कि पैसों को लेकर दोनों के बीच कहा सुनी हो गई थी जिसके बाद उमेश ने शारदा का सिर दीवार पर दे मारा लेकिन जब वह बच गई तो उसने चाकू लेकर शारदा के पेट में मार दिया। घटना के वक्त आरोपी उमेश राठौर की बेटी ईशानी और दो अन्य बच्चे भी घर में ही मौजूद थे जिनके सामने यह पूरी घटना हुई थी।

सभी मतदान केंद्रों पर मूलभूत व्यवस्थाएं दुरुस्त रहें-कलेक्टर

उज्जैन। लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत जिले के सभी मतदान केंद्रों पर मूलभूत व्यवस्थाएं दुरुस्त रहें। किसी भी स्तर पर कोई कमी न छोड़ें। सभी विधानसभाओं में 15-15 आदर्श केंद्र बनाएं जाएं। यह निर्देश कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नीरज कुमार सिंह ने सोमवार को प्रशासनिक संकुल भवन में आयोजित समयसीमा की बैठक में सभी सहायक रिटर्निंग अधिकारियों को दिए हैं।

उन्होंने कहा कि मतदान के समय तेज गर्मी को ध्यान में रखते हुए मतदान केन्द्रों में पर्याप्त छाया,पानी, दवाईयां, ओआरएस पैकेट आदि आवश्यक व्यवस्थाएं उपलब्ध रहें। मतदान केन्द्र में आने पर मतदाताओं को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए।

कलेक्टर श्री सिंह ने निर्देश दिए कि निजी भवनों में बनाएं गए मतदान केंद्रो वाले भवनों का अधिग्रहण किया जाए। उन्होंने 15 अप्रैल तक प्राप्त मतदान सूची में नाम जोड़ने, संशोधित और विलोपित करने संबंधी आवेदनों का प्राथमिकता से निराकरण कराए जाने के लिए कहा।

उन्होंने निर्देश दिए कि ईवीएम मशीनों की कमीशनिंग, पोस्टल बैलट, होम वोटिंग, सामग्री वितरण संबंधी नियुक्त अधिकारी कर्मचारियों के दल को निर्धारित शेड्यूल के अनुसार अच्छे से प्रशिक्षण दिया जाए। उन्होंने सी विजिल, कंट्रोल रूम, ऑनलाइन ऑफलाइन निर्वाचन संबंधी प्राप्त शिकायतों का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने परिवहन प्रबंधन के संबंध में मतदान के लिए बसों को चिन्हित कर अधिग्रहण आदेश जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा बसों में जीपीएस भी लगाया जाना सुनिश्चित कराएं। मतदान दलों के रवानगी स्थल इंजीनियरिंग कॉलेज में भी आवश्यक व्यवस्थाएं की जाएं। उन्होंने स्वीप गतिविधियों को और प्रभावी ढंग से आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 75 प्रतिशत से कम मतदान वाले 479 केन्द्रों पर डोर टू डोर मतदाता जागरूकता की गतिविधियां की जाएं।

कलेक्टर श्री सिंह ने बैठक में सभी सहायक रिटर्निंग अधिकारियों से क्रिटिकल और वलनरेबल मतदान केंद्रो के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी सेक्टर अधिकारी अपने क्षेत्र का अनिवार्य रूप से 3 बार भ्रमण किया जाना सुनिश्चित करें। ईवीएम प्रबंधन के संबंध में उन्होंने 1 मई को ईवीएम मशीनों का सेकेंड रैंडामाईजेशन किये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आदर्श आचरण संहिता का गंभीरता से पालन कराया जाए। कोलाहल नियंत्रण अधिनियम का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की जाए। सभी एसएसटी चेक पोस्ट पर गुजरने वाले वाहनों की सघन जांच की जाएं। निर्वाचन को प्रभावित करने वाली सामग्रियों को जप्त करें। कलेक्टर श्री सिंह ने पोस्टल बैलेट, बैलट पेपर की

कार्यवाही की भी समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने उपार्जन की समीक्षा कर उपार्जन संबंधी अधिकारियों को निर्देशित किया किया प्रत्येक केंद्र पर गुणवत्तापूर्ण खरीदी की जाना सुनिश्चित कराएं। स्वीकृति पत्रक भी समय पर जारी हो। किसानों को समय पर भुगतान किया जाए। उन्होंने स्कूली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वितरण की भी समीक्षा कर निर्देशित किया किया कि छात्रवृत्ति के लाभ से कोई भी पात्र छात्र वंचित न रहे। छात्रवृत्ति के सभी प्रकरणों का निराकरण किया जाए। पंचक्रोशी यात्रा की तैयारियों की समीक्षा कर कलेक्टर श्री सिंह ने संबंधित विभागों को सौंपे गए दायित्वों को समय पर पूर्ण करने की निर्देश दिए। उन्होंने एमपीईबी को पड़ाव मार्गों पर स्ट्रीट लाइट लगाने का काम शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने वन विभाग को मधुमक्खी के छत्ते हटाने का काम किए जाने के लिए निर्देशित किया। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को पेयजल संबंधी व्यवस्थाएं करने के निर्देश दिए गए।

जनपद उज्जैन एवं जनपद पंचायत घट्टिया को अपने क्षेत्र में सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने खाद्य विभाग को उचित मूल्य की दुकानें स्थापित करने के लिए निर्देशित किया। मलेरिया विभाग को मलेरिया और डेंगू आदि बीमारियों से बचाव के लिए दवाओं का छिड़काव कराने के निर्देश दिए गए। उल्लेखनीय है कि 27 अप्रैल को अधिकारियों द्वारा यात्रा की तैयारी का विस्तृत निरीक्षण किया जाएगा।

डूबने से बचाया

उज्जैन। डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट होमगार्ड श्री संतोष कुमार जाट द्वारा जानकारी दी गई कि रामघाट पर स्नान करने आये इंदौर निवासी युवक अंश खरे पिता शैलेश खरे और चेतन बरेलिया पिता ओमप्रकाश बरेलिया तथा अहमद नगर (महाराष्ट्र) निवासी अजय पिता सुनील बरेलिया रामघाट धर्मराज मंदिर के घाट पर नहाते समय तैराकी करने के प्रयास में गहरे पानी में जाने से डूबने लगे। डिस्ट्रिक्ट होमगार्ड जवानों द्वारा की गई जीवन रक्षा

तीनों युवकों को डूबते देख घाट पर मुस्तैदी से ड्यूटी कर रहे SDERF जवान जितेंद्र भदौरिया, धर्मेंद्र डाबी, उपेंद्र सिंह एवं नवीन बैरागी ने बचाव उपकरण 'लाइफबाय थ्रो बेग' की मदद से पानी से सुरक्षित बाहर निकालकर तीनों युवकों की जान बचाई। घटना के दौरान वहां उपस्थित स्वयं ठाकुर, हेमन्त एवं कालू यादव निवासी रामघाट राम मंदिर द्वारा SDERF टीम की मदद बचाव कार्य में की गई। जिला सेनानी द्वारा SDERF टीम के बचाव कार्य हेतु उनके उत्साहवर्धन के लिए पूरी टीम को पुरस्कार दिया गया।

24 अप्रैल को संत निरंकारी सत्संग भवन में लगेगा रक्तदान शिविर

उज्जैन। संत निरंकारी मिशन ब्रांच उज्जैन द्वारा सतगुरू माता सुदीक्षाजी महाराज की प्रेरणा से मानव एकता दिवस 24 अप्रेल बुधवार को प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक संत निरंकारी सत्संग भवन, पवासा, मक्सी रोड पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिसमें जिला चिकित्सालय के चिकित्सकों व सहयोगियों द्वारा रक्त लिया जायेगा।

उज्जैन इंचार्ज त्रिलोक बेलानी ने बताया कि संत निरंकारी मिशन के तत्वावधान में 37 वर्षों से जारी रक्तदान शिविर की श्रंखलाओं मे पिछले वर्ष मार्च 2023 तक आयोजित 7585 शिविर में 1247000 ब्लड यूनिट का कलेक्शन हो चुका था, जो कि प्रति शिविर 165 यूनिट का औसत है।

संत निरंकारी सत्संग भवन, पवासा में रविवार 21 अप्रैल को हुए सत्संग में त्रिलोक बेलानी ने बताया कि मानवता के मसीहा बाबा गुरबचन सिंह जी की पावन स्मृति में प्रति वर्ष 24 अप्रैल का दिन संपूर्ण निरंकारी जगत द्वारा देश एवं दूर देशों में रक्तदान शिविरों के आयोजन से मानव एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मानव कल्याणार्थ हेतु संत निरंकारी मिशन की सामाजिक शाखा संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा भारतवर्ष में स्थापित निरंकारी मिशन की लगभग सभी ब्रांचों सहित उज्जैन में रक्तदान शिविर जैसे महाअभियान का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सभी रक्तदाता स्वैच्छापूर्वक सम्मिलित होकर पूरे जोश एवं उत्साह से रक्तदान करेंगे।

आपने बताया कि युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी ने सत्य के बोध द्वारा मानव जीवन को सभी प्रकार के भ्रमों से मुक्त करवाया; साथ ही समाज उत्थान हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओं को क्रियान्वित किया जिनमें सादा शादियां, नशा मुक्ति एवं युवाओं को खेलो के प्रति प्रेरित किया। समाज में व्याप्त कुरितियों के उस दौर के उपरांत बाबा हरदेव सिंह जी के प्रेरक संदेश रक्त नाड़ियों में बहे, न कि नालियों में द्वारा सभी श्रद्धालुओ को एक नई सकारात्मक दिशा मिली। उसी प्रेरक संदेश को प्रत्येक निरंकारी भक्त मानवता के उपकार हेतु निरंतर उसे जीवन्त रूप में अपनाकर लोककल्याणार्थ हेतु अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे है।

संत निरंकारी मिशन में आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर में रक्तदान से पूर्व की जाने वाली जाँच एवं स्वच्छता की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जायेगा।

साथ ही रक्तदाताओं हेतु जलपान की समुचित प्रबंध व्यवस्था भी की जा रही है। रक्तदान शिविरों में रक्त संग्रहित करने हेतु जिला अस्पताल की टीम आयेंगी।

नाला एवं नालियों का सफाई कार्य जारी

उज्जैन। वर्षा ऋतु आरंभ होने के पूर्व शहर के समस्त छोटे एवं बड़े नाले एवं नालियों की सफाई का कार्य पूर्ण कर लिया जाए साथ ही जिन नाले एवं नालियों की सफाई का कार्य पूर्ण हो चुका हो उनका भी सतत् निरीक्षण कर कचरा जमा होने की स्थिति में पूनः सफाई करवाई जाए। यह निर्देश आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा स्वास्थ्य विभाग अमले को दिए गए। आपने कहा कि वर्षा ऋतु के पूर्व यह सुनिश्चित कर लिया जाए की किसी भी नाले-नालिया जाम ना हो तथा उनमें किसी भी प्रकार का कचरा ना फसा हो, जिन क्षैत्रों में जलभराव की समस्या उत्पन्न होती है वहां के नाले-नालियों की सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाए।

आपने कहा कि वर्षा ऋतु के पूर्व समस्त नाले एवं नालियों की सफाई का कार्य 30 मई तक पूर्ण किया जाना हमारा लक्ष्य है ताकी पुनः एक बार समस्त नाले एवं नालियों की सफाई करवाई जा सके। नगर निगम द्वारा स्वयं के संसाधनों के माध्यम से जिसमें जेसीबी, पोकलेन डंपर, बॉबकेट मशीन,ट्रैक्टर ट्राली का उपयोग किया जा रहा है। सोमवार को भी विभिन्न क्षेत्रों में नालों की सफाई का कार्य किया गया जिसके अंतर्गत वार्ड क्रमांक 17 हीरा मिल का नाला, वार्ड क्रमांक 50 ऋषिनगर स्थित नाला, वार्ड क्रमांक 54 उद्योगपुरी क्षेत्र स्थित नाले की सफाई का कार्य किया गया साथ ही ऐसे वार्ड जहां पर बड़े वाहन नहीं पहुंच पाते हैं वहां पर नाला गैंग के कर्मचारियों के माध्यम से सफाई का कार्य सुनिश्चित किया जा रहा है।

कछवाय की 29वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी

उज्जैन। उज्जैन संसदीय क्षेत्र के पूर्व सांसद श्री हुकमचंद कछवाय की 29वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 21 अप्रैल रविवार को श्री माधव क्लब उज्जैन के स्वीमिंग पुल प्रांगण में श्री माधव तैराकी ग्रुप ने पूर्व सांसद श्री कछवाय के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

कछवाय मेमोरियल ट्रस्ट के प्रवक्ता राकेश दीक्षित के अनुसार डॉ. सुधीर गवारीकर ने संबोधन में श्री कछवाय के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री हुकमचंद कछवाय 1962 से 1980 तक 4 बार लोकसभा सदस्य रहे। जिसमें 2 बार उज्जैन संसदीय सीट से एवं 1-1 बार देवास-शाजापुर एवं मुरैना संसदीय सीट से उन्होंने प्रतिनिधित्व किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने श्री कछवाय को कोरम किंग का दर्जा दिया था। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. अटलबिहारी बाजपेयी के प्रिय जनों में श्री कछवाय शुमार थे। श्रद्धांजलि अर्पित करने के उपरांत ग्रुप सदस्यों ने 13 मई 2024 को होने वाले आम चुनाव में अपने मताधिकार का उपयोग करते हुए स्वयं एवं परिजनों के 100 प्रतिशत मतदान की शपथ ली।

शपथ उपरांत उपस्थित सदस्यों को 100 से अधिक सकोरे वितरीत किये जाकर ग्रीष्मकाल में इनके माध्यम से पक्षियों की जलसेवा का आव्हान किया गया। इस अवसर पर संरक्षक सुनील कछवाय, चेयरमेन नरेन्द्र कछवाय, भूपेन्द्र कछवाय, डॉ. सुधीर गवारीकर, डॉ. संदीप चौरसिया, डॉ. नीरज गुप्ता, डॉ. राकेश सोनकर, मांगीलाल बाहेती, प्रकाश मोटवानी, प्रदीप सोमानी, आनंद गेहलोत, रितेश धारीवाल, आनंद अग्रवाल, अशोक जोशी, डॉ. टीटी खालसा, विष्णु गोयल, हेमंत मीणा, संजय जोशी, नितीन मीणा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सुपरहिट गीतों से बांधा समा

उज्जैन। कुछ ना कहो.. दिल तो पागल है..,रिमझिम रिमझिम रूमझुम..., दिल हैं कि मानता नहीं..., आके तेरी बाहों में....,जैसे गीतों की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को मोहित कर लिया।

अवसर था, स्वरांजली ग्रुप द्वारा पेश सुरों से गुनगुनाती हुई हसीन शाम का। स्वरांजली के अध्यक्ष राजेश जोशी और संयोजक डॉ. परेश राय ने बताया कि कार्यक्रम के अध्यक्ष उमेश भट वरिष्ठ संगीतज्ञ और मुख्य अतिथि आनंद बांगड़ थे। संगीत संध्या का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ।

कार्यक्रम में सूर्यकांत बरहानपुरकर को लाईफ टाईम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सूत्रधार नितिन पोल थे। संचालन वर्षा कमलाकर और मंगेश जोशी ने किया।

आर डी बर्मन, जतिन-ललित, नदीम-श्रवण, ईस्माइल दरबार, अन्नू मलिक की सुमधुर रचनाएं प्रस्तुत की गई। 90 के दशक की सुपरहिट रचनाओं की प्रस्तुति से राधा मेहता, राजेश जोशी, डॉ. परेश राय, नंदिता राय, ममता शर्मा, लखन जागीरदार, दीपक माकोड़े, विकास सहस्त्रबुद्धे, भालचंद्र कुलकर्णी, माधुरी मेहता, सुप्रिया बोथरा, वृषाली कुलकर्णी, देवेंद्र दुबे, अमल कुमार बिडवई, अनुपमा दुबे, अनिता जोशी, अर्पिता कमलाकर, भारती कुलकर्णी, राजेश सोहोनी, प्रेरणा सोहोनी, बीएम खंडेलवाल ने श्रोताओं को कार्यक्रम समाप्त होने तक बांधे रखा।

बंदियों के आधार कार्ड बनवाये

उज्जैन। मप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री दीपेश तिवारी तथा जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री कपिल भारद्वाज के निर्देशन में केंद्रीय जेल भैरवगढ़ में बंदियों के हितार्थ विधिक साक्षरता शिविर एवं जेल निरीक्षण एवं दो दिवसीय निःशुल्क आधार कार्ड शिविर का आयोजन किया गया। आधार कार्ड शिविर का आयोजन भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के समन्वय में किया गया। उक्त शिविर में श्री चन्द्रेश मण्डलोई के द्वारा बंदियों की समस्याएं सुनी जाकर उनका निराकरण किया गया और बंदियों को बताया गया कि यदि कोई बंदी अपनी पैरवी या अपील करने में अक्षम है तो प्राधिकरण द्वारा निःशुल्क अधिवक्ता दिलाया जाएगा। बंदियों के विधिक अधिकारों की जानकारी भी दी जाकर जेल का निरीक्षण किया गया और ऐसे बंदियों की पहचान सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये जिन्हें सजा हो जाने के उपरांत भी उनकी अपीलें वरिष्ठ न्यायालय में नहीं की गई है। उनके द्वारा बंदियों को प्ली बार्गेनिंग एवं लोक अदालत के माध्यम से भी प्रकरणों के निराकरण कराने की सलाह दी गई। साथ ही उन्होंने जेल में निरुद्ध 10 वर्ष से अधिक की सजा पा रहे ऐसे बंदी जिनकी सुनवाई नहीं हो रही है एवं जो विचाराधीन बंदी हैं। निःशुल्क आधार कार्ड शिविर के माध्यम से कुल 80 बंदियों के आधार कार्ड बनवाये गये। इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री मनोज साहू, जेलर श्री प्रवीण मालवीय, आधार सेवा केंद्र के सुपरवाईज़र श्री रवि प्रजापत, श्री श्रवण मालवीय सहित जेल के अन्य कर्मचारीगण व बंदीजन उपस्थित रहे।

पीले चावल देकर मतदाताओं को दिया जा रहा मतदान का न्योता

इंदौर। इंदौर संभाग में लोकसभा चुनाव को देखते हुए मतदान के प्रति मतदाताओं को जागरूक करने के लिए अनेक नवाचार किये जा रहे हैं। अनेक गतिविधिया भी लगातार चलाई जा रही है। इसी के तहत संभाग के खरगोन जिले में मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिए बुलावा अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान के माध्यम से मतदाताओं को घर-घर जाकर पीले चावल देकर मतदाताओं को मतदान के लिए न्योता दिया जा रहा है। खरगोन कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी कर्मवीर शर्मा और स्वीप जिला नोडल

अधिकारी आकाश सिंह के मार्गदर्शन में लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से बुलावा अभियान प्रारंभ किया गया है। बुलावा अभियान के तहत रविवार को जिले के विभिन्न गांवों में घर-घर जाकर पीले चावल देकर मतदाताओं को मतदान करने का न्योता दिया गया। घर-घर न्योता देकर जिला प्रशासन की टीम द्वारा लोगों को लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत मतदान तिथि और समय बताया जा रहा है। बुलावा अभियान के तहत मतदाताओं से अपने मताधिकार का उपयोग जरूर करने की अपील की जा रही है और उन्हें मतदान करने का आमंत्रण पत्र भी दिया जा रहा है।

प्रभु के रथ को इंद्र के रूप में समाज के युवाओ ने खींचा

उज्जैन। सत्य, अहिंसा, शांति एवं अपरिग्रह के प्रणेता जैन धर्म के 24 तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक पर खाराकुआ स्थित श्री सिद्धचक्र केसरियानाथ तीर्थ से श्वेतांबर-दिगंबर समाज का सामूहिक जुलूस निकला। जिसमें चांदी की दो वेदी जी में प्रभु को विराजमान कर समाजजन अपने कांधे पर उठाकर निकले। प्रभु के रथ को इंद्र के रूप में समाज के युवाओ ने खींचा।

अभ्युदयपुरम गुरुकुल प्रणेता आचार्य डॉ. मुक्ति सागर सुरीश्वर जी, आचार्य अचल मुक्ति सागर सुरीश्वर जी, गणिवर्य अक्षतरत्न सागर जी सहित अन्य साधु साध्वी मंडल ने निश्रा प्रदान की। जुलूस में 24 तीर्थंकर के चित्र, डीजे, बैंड, विद्यार्थियों का जैन बैंड, सजे धजे परिधान में महिला मंडल एवं हजारों की संख्या में समाजजन शामिल हुए। मार्ग में त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की के जयकारे लगाते समाजजन भक्ति में लीन दिखे। समाज के डॉ. राहुल कटारिया के अनुसार जुलूस नमक मंडी, छोटा सराफा, सती गेट, कंठाल, फवारा चौक, इंदौर गेट, सखीपुरा, घी मंडी, तोपखाना उपकेश्वर चौराहा, बंसफोड़ गली होते हुए पुनः खाराकुआ मंदिर पर पहुंचकर समाप्त हुआ। इसके उपरांत श्वेतांबर जैन समाज का साधार्मिक वात्सल्य सामाजिक न्याय परिसर में हुआ। जिसके लाभार्थी श्रीमती निर्मला बेन सागरमल जी कोठारी नयापुरा रहे। स्वामी वात्सल्य युवा समिति की ओर से कोठारी परिवार का बहूमान किया गया। इधर दिगंबर जैन समाज का साधार्मिक वात्सल्य जयसिंहपूरा जैन मंदिर पर आयोजित हुआ।

इस मौके पर पूर्व मंत्री पारस जैन, महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के संयोजक डॉ. संजीव जैन, संजय जैन खलीवाला, अनिल गंगवाल, देवेंद्र कांसल, अभय मेहता, सुभाष दुग्गड़, नितिन डोसी, डॉ. राहुल कटारिया, वरुण श्रीमाल, अश्विन मेहता, पवन बोहरा, जम्मू धवल, संजय बापना, एमआईसी मेंबर रजत मेहता, निलेश सिरोलिया, संजय मेहता मिलन,नरेंद्र तल्हेरा, संजय कोठारी, अमित कावड़िया, शैलेंद्र जैन,अभय जैन भेया, इंजी. संदीप जैन, रितेश खाबिया, राहुल सर्राफ, पुनीत जैन, दीपक डागरिया सहित बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे। श्वेतांबर दिगंबर दोनों समाजों का जुलूस एक साथ होने से यह करीब डेढ़ किलोमीटर लंबा हो गया। मार्ग में विभिन्न स्थानों पर मंच लगाकर सामाजिक संस्थाओं वी लोगों ने स्वागत किए। कई जगह तेज धूप से बचने के लिए शामियाने व शीतल जल के प्रबंध किए गए। वही समाज के युवा नंगे पैर प्रभू की वेदी जी कांधे पर उठा कर चले।

भाजपा-कांग्रेस प्रत्याशी आपस में मिले, किया अभिवादन ठाल पर जुलूस में भाजपा प्रत्याशी व सांसद अनिल फिरोजिया भी विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा के साथ जुलूस में पहुंचे। वेदी जी उठाई और आचार्य श्री से आर्शीवाद लिया। कांग्रेस प्रत्याशी व विधायक महेश परमार ने शहर कांग्रेस अध्यक्ष मुकेश भाटी के साथ जुलूस का स्वागत किया एवं वेदी जी को कांधा दिया। नई सड़क पर दोनों प्रत्याशी ने एक दूसरे से मिले और अभिवादन किया।

कांग्रेस के डीएनए में है तुष्टिकरण एवं वोट बैंक की राजनीति-मोदी

सक्ती। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा और कहा कि तुष्टिकरण एवं वोटबैंक की राजनीति कांग्रेस के डीएनए में है और यही उसकी पहचान बन चुकी है।

श्री मोदी ने छत्तीसगढ़ में सक्ती जिले के जेठा में जांजगीर-चांपा लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार कमलेश जांगड़े के समर्थन में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि तुष्टिकरण एवं वोटबैंक की राजनीति के अलावा कांग्रेस का एक और सबसे बड़ा प्रतीक परिवारवाद है।

वर्ष 2014 से पहले कांग्रेस की सरकार रही लेकिन इसे एक परिवार अपने रिमोट से कंट्रोल करता रहा। उन्होंने आरोप लगाया कि ये कांग्रेस ही है जिसने सत्ता में आदिवासियों को कभी अहमियत नहीं दी और जब हमने देश के सबसे बड़े पद पर एक आदिवासी को पदारुढ़ किया तो यही पार्टी इसके खुले विरोध में उतर आयी।

उन्होंने कहा कि गरीबी हटाओ के नाम पर कांग्रेस ने बीते 60 सालों तक देश में राज किया लेकिन गरीबी तो खत्म नहीं हुई बल्कि कांग्रेस के लोग अपनी जेब भरते तथा अमीर होते गये। उन्होंने कहा , हमने झूठे सब्जबाग नहीं दिखाये। आपने हमारी सरकार बनायी और हमने आपकी उम्मीदों के अनुरूप गरीबों के हित में काम किया तथा 25 करोड़ लोगों को गरीबी से उबारा। उन्होंने जोर दिया कि मोदी की गारंटी है और मोदी जो कहता है उसे पूरा करता है। गरीबों को मुफ्त राशन योजना अगले पांच सालों तक जारी रहेगी यह भी मोदी की गारंटी है।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ का किसान फसल बेचने की जद्दोजहद और पर्याप्त कीमत न मिलने के कारण ज्यादा धान की पैदावार करने में रूचि नहीं लेता था लेकिन आज प्रदेश में भाजपा की सरकार ने इसका समाधान किया है। विष्णुदेव साय सरकार की ओर से किसान सम्मान निधि के रूप में किसानों को सात हजार करोड़ रूपये दिये गये हैं और आगे भी दिये जाते रहेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा मैं कुछ माह पूर्व विधानसभा चुनाव के दौरान आपके पास आर्शीवाद के लिए आया था।

केंद्र में हमारी तीसरी बार सरकार बने और हम आपकी सेवा करते रहें। यही प्रतिबद्धता लिए आज फिर आपके आर्शीवाद के लिए यहां आया हूं। उन्होंने कहा, मैं आप सबके लिए लगातार रात-दिन काम करता रहता हूं। आगामी 26 अप्रैल को आपको भी मोदी के लिए एक घंटा निकालना है और अपना वोट देना है।

आप भाजपा उम्मीदवार को चुनाव में जिताकर दिल्ली भेजें। मुझे उनके सहयोग की जरुरत है।

नक्सलियों की मौत पर विपक्ष क्यों बहा रहा आंसू?

कांकेर मुठभेड़ को लेकर कांग्रेस और सत्तारूढ़ पार्टी के बीच जमकर वाकयुद्ध जारी है। पर, नक्सलवाद की समस्या चुनाव तक ही सीमित नहीं रहने वाली? क्योंकि देश विगत 70 वर्षों से नक्सल आतंकवाद झेलता आया है। अब समय की मांग है कि इसे जड़ से खत्म किया जाए। केंद्र की योजना फिलहाल इसी ओर अग्रसर भी है। अभी तक हजारों नक्सली मारे गए हैं जिनमें बड़ी संख्या में हमारे जवान भी शहीद हुए हैं। इसलिए इस समस्या को राजनीतिक चश्मे से देखने कतई औचित्य नहीं? इस समस्या को जड़ से मिटाने की राष्ट्रीय नीति के प्रति सभी को एक समान विचार रखना चाहिए। केंद्र सरकार ने गत दस वर्षों में नक्सल उन्मूलन की नीति पर एक निरंतरता बनाया हुआ है जिसके बेहतरीन परिणाम भी मिले हैं। छत्तीसगढ़ के कांकेर में पिछले सप्ताह केंद्रीय सुरक्षाकर्मियों ने एक ऑपरेशन के तहत बड़ी संख्या में नक्सलियों को मार गिराया। सूचनाएं थी कि नक्सली चुनाव में गड़बड़ी करने वाले थे। उनका निशाना पोलिंग बूथ थे। उनके पास से बड़ी मात्रा में हथियार और गोला बारूद बरामद हुआ। नक्सलियों पर इस कार्रवाई को लेकर एक दफा फिर कांग्रेस ने प्रमाणिकता पर सवाल उठाए हैं। वाजिब सवाल ये है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुरक्षाबलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीतिक रंग देने में किसका भला होगा? भूपेश बघेल तो मुठभेड़ को फर्जी भी बता रहे हैं। वहीं, कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने भी बिना सोचे समझे नक्सलियों से हमदर्दी जताई। हालांकि, विरोध होने पर अब दोनों अपने बयानों को लेकर लीपापोती करने में लगे हैं। कुछ विपक्षी नेताओं ने इससे पूर्व भी नक्सलियों को शहीद बताकर उनके प्रति हमदर्दी जताई थी। यह तो जगजाहिर है ही कि कांग्रेस नक्सल आंदोलन के हिंसावादी रवैये की प्रति शुरू से नरम रही है। जबकि, कायदे से देखें तो नक्सलियों ने उनके भी कई नेताओं को मौत के घाट उतारा है।

आंकड़ों पर गौर करें तो 2004-14 के यूपीए के दस सालों के नक्सली हमलों या मुठभेड़ों में 1,750 सुरक्षा बलों के जवानों की शहादत हुई थी, लेकिन 2014-23 में करीब 72 फीसदी तक कमी आई। इस दौरान 485 सुरक्षाबलों के जवानों की जान गई। इसी अवधि में नागरिकों की मौत की संख्या भी 68 प्रतिशत घटकर 4,285 से 1,383 हुई। कांग्रेस सरकार अपने वक्त में ये तय नहीं कर पाई थी कि वह आर्म्ड वाम विद्रोह के खिलाफ केंद्रीय नीति किस तरह की रखे। कांग्रेस के नेताओं में इस पर एकमत था ही नहीं। प्रधानमंत्री के रूप में मनमोहन सिंह उच्चस्तरीय सुरक्षा सम्मेलनों में तो यह कहते रहे कि नक्सलवाद देश के लिए खतरा है। पर, गृहमंत्री के रूप में चिदंबरम ने सशस्त्र विद्रोह के प्रति कोई आक्रामक नीति कभी बनाई ही नहीं? मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे दिग्विजय सिंह ने नक्सलवाद के मूल कारणों को ढूंढने के अपने सिद्धांत बना लिए और उसी की वकालत करते रहे।

सन 2009 में यूपीए सरकार ने ऑपरेशन ग्रीन हंट शुरू किया था। तब कहा गया था कि सरकार नक्सलियों को पूरी तरह खत्म कर देगी। सीआरपीएफ को इसके लिए खास तरह के टास्क दिए गए। इस अभियान में भारतीय सेना को भी लगाया गया। लेकिन, यह ऑपरेशन सुरक्षा बलों के लिए ही काल बन गया। अप्रैल-2010 में नक्सलियों ने दंतेवाड़ा में एक ही दिन 76 सीआरपीएफ के जवानों की हत्या कर दी। घरेलू मोर्चे पर यह ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद सुरक्षाबलों की सबसे ज्यादा मौतों की यह घटना बन गई। यूपीए में तीन-तीन गृह मंत्री बनाए गए, शिवराज पाटिल, चिदंबरम और सुशील शिंदे। नक्सलवाद को लेकर तीनों की अपनी अलग-अलग राय थी। यूपीए सरकार में ही हिंसक नक्सलियों को गुमराह और नेक इरादे वाले लोगों के रूप में वर्णन किया गया। यूपीए सरकार ने ही मलकानगिरी के कलेक्टर विनील कृष्णा के बदले में आठ माओवादियों को रिहा किया। उसी दौरान माओवादी समर्थकों का एक पढ़ा लिखा वर्ग भी तैयार हुआ, जिन्हें आज अर्बन नक्सली कहा जाता है। फिलहाल केंद्र सरकार अब ये दावा करती है कि उसने हिंसक वाम आंदोलन और उग्रवाद खिलाफ जोरदार अभियान छेड़ा है।

नक्सल वामपंथी उग्रवाद को किसी भी तरह की रियायत नहीं दी जाएगी। 2015 में मोदी सरकार ने आतंकवाद और उग्रवाद के खिलाफ 'राष्ट्रीय नीति और कार्ययोजना' शुरू की थी, जिसमें हिंसा के प्रति 'जीरो टॉलरेंस' की बात कही गई थी। सरकार ने उसी समय से किसी भी तरह की हिंसा से निपटने के लिए पुलिस और सुरक्षाबलों का आधुनिकीकरण करना शुरू कर दिया। प्रशिक्षण के लिए विशेष तौर पर फंड जारी किए। इसके साथ ही सरकार ने हिंसा प्रभावित राज्यों की सहायता के लिए विशेष बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की योजना पर काम शुरू किया। सुरक्षा जरूरतों में आने वाले खर्चों के लिए अलग से धनराशि जारी की। इतना ही नहीं इस पूरे काम की निगरानी करने के लिए सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल में अमित शाह के नेतृत्व में गृह मंत्रालय में एक अलग डिवीजन बनाया। इसे वामपंथी उग्रवाद प्रभाग का नाम दिया गया।

वामपंथी उग्रवादियों का मुकाबला करने और राज्य पुलिस बलों की क्षमता को बढ़ाने के लिए राज्यों में इंडिया रिजर्व बटालियन का भी गठन किया गया। लगातार ऑपरेशन से माओवादियों और नक्सलियों के पांव उखड़ गए हैं।

हिंसा और अपराधों के आकड़े में लगातार कमी आई है। वर्ष 2014 से 2023 के बीच में वामपंथी उग्रवाद से संबंधित हिंसा में 52 फीसदी से अधिक की कमी आई है। इस तरह कुल मौतों में भी 69 फीसदी की कमी आई है। सुरक्षाबलों के हताहतों की संख्या इस समय काफी कम है। यह एक बड़ी उपलब्धि है। ये तभी संभव हुआ जब केंद्रीय गृह मंत्रालय ने केंद्र और राज्यों के बीच एक सहयोगात्मक दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके चलते ही विगत वर्षों में उग्रवादी गुटों के कई सदस्य सरकार के सामने आत्मसमर्पण करने को भी मजबूर हुए।

केंद्र सरकार ने कई मर्तबा वामपंथी उग्रवादियों को हिंसा छोड़ने और बातचीत करने का प्रस्ताव दिया था। उनके लिए केंद्र ने कई विकास परियोजनाएं भी शुरू करने की बात कही। इनमें वामपंथी उग्रवाद से ग्रस्त क्षेत्रों में 17,600 किलोमीटर सड़कों को मंजूरी देना। केंद्र ने राज्यों को नियमित निगरानी के लिए हेलीकॉप्टर और मानव रहित हवाई वाहन उपलब्ध करवाना। सुरक्षा इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाने के लिए स्पेशल फंड्स जारी किए। इस मद में करीब 971 करोड़ रुपये की परियोजनाएं मंजूरी भी हुईं। इन परियोजनाओं में 250 किलेबंद पुलिस स्टेशन स्थापित करने का काम शुरू भी हुआ। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए सड़क आवश्यकता योजना को केंद्र सरकार ने आठ राज्यों आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा और उत्तर प्रदेश के 34 जिलों में लागू किया है। इस योजना में 5,362 किलोमीटर सड़कों का निर्माण हो भी चुका है।

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में मोबाइल कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए सरकार ने अगस्त 2014 में इन क्षेत्रों में मोबाइल टावरों की स्थापना को भी मंजूरी दी। अब तक 4885 मोबाइल टावर लगाए गए हैं। दूसरे चरण में 2,542 मोबाइल टावर और लगाए जा रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार ने वामपंथी उग्रवाद के पीड़ित परिवारों के लिए मुआवजे को 2017 में 5 लाख से बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिए और अब इसमें बढ़ोतरी करके 40 लाख रुपये कर दिए हैं। नक्सली फिर भी बाज नहीं आ रहे। तभी हारकर अब उनके खिलाफ पुलिस टेक्नोलॉजी मिशन शुरू हुआ है। ताकि इनपर अंतिम प्रहार किया जाए। कांकेर मुठभेड़ उसी का हिस्सा है।

यूथ कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष राजेश परमार भाजपा में शामिल

उज्जैन। लोकसभा चुनाव के पहले कांग्रेस को एक और झटका लगा। यूथ कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष राजेश परमार राधू दा ने अपने हजारों समर्थकों के साथ 22 अप्रैल को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं लोकसभा प्रत्याशी अनिल फिरोजिया के समक्ष भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

भाजपा नगर उपाध्यक्ष मुकेश यादव की अगुवाई में राजेश परमार ने संभागीय मीडिया चुनाव कार्यालय के उद्घाटन अवसर पर भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। यहां मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं अनिल फिरोजिया ने राजेश परमार को भाजपा का दुपट्टा पहनाकर भाजपा की सदस्यता प्रदान की। राजेश परमार ने कहा कि मैं करीब 35 वर्षों से कांग्रेस पार्टी की सेवा करता रहा। लेकिन कांग्रेस द्वारा राम मंदिर के आमंत्रण को ठुकरा देने से उनकी भावनाएं आहत हुईं। अयोध्या में रामलला के प्रतिष्ठा महोत्सव का आमंत्रण कांग्रेस पार्टी ने ठुकरा दिया, वहीं अब तक कांग्रेस के शीर्ष नेता भगवान श्रीराम के दर्शन करने तक नहीं गए। राजेश परमार ने भाजपा की रीति नीति को समझते हुए, कांग्रेस जैसी पार्टी को त्याग कर भाजपा ज्वाइन की। राजेश परमार ने प्रण किया कि सदैव भाजपा के साथ तन मन धन से एक कार्यकर्ता के रूप में पार्टी के आदेश पर कार्य करते रहेंगे। राजेश परमार राधू दा माकड़ोन की सदस्यता ग्रहण करने के अवसर पर विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा, पूर्व विधायक राजेंद्र भारती, नगर अध्यक्ष विवेक जोशी, जिलाध्यक्ष बहादुर सिंह बोरमुंडला, प्रदेश प्रवक्ता राजपाल सिंह सिसौदिया, सनवर पटेल, प्रदेश मीडिया सहप्रभारी सचिन सक्सेना, रवि सोलंकी, उमेश सेंगर, प्रमोद भट्ट, विनोद सोनी, राकेश सोलंकी, विजय बांगड़ निलेश यादव, बबलू यादव आदि मौजूद रहे। यह जानकारी भाजपा के नगर जिला कार्यसमिति सदस्य प्रमोद भट्ट ने प्रदान की।

बैलून करेगा मतदाताओं को जागरूक

उज्जैन। लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र मतदाता जागरूकता संबंधी गतिविधियां तेजी से जारी हैं। इसी क्रम में नगर निगम उज्जैन एवं नगर परिषद माकड़ोन द्वारा बड़ा बैलून स्थापित कर मतदाताओं को लोकतंत्र के इस महापर्व में 13 मई को मतदान करने का संदेश दिया जा रहा हैं। बैलून के माध्यम से मेरा पहला वोट देश के लिए मतदान अवश्य करें की थीम के माध्यम से मतदाताओं को अधिक संख्या में मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा हैं। उज्जैन संसदीय क्षेत्र में 13 मई को मतदान किया जाएगा। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं स्वीप नोडल अधिकारी श्री मृणाल मीणा ने बताया कि जिले के समस्त मतदाताओं को अपने मताधिकार के प्रति जागरूक करने, कम मतदान प्रतिशत वाले मतदान केंद्रों पर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए स्वीप अंतर्गत विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

सूरत से मिली भाजपा को पहली विजयी

सूरत। लोकसभा चुनाव-2024 में भाजपा को पहली सीट सूरत से मिली है। सूरत लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार मुकेश दलाल ने निर्विरोध जीत कर इतिहास रच दिया है। नाम वापस लेने के अंतिम दिन कुल 9 मान्य नामांकन में से 8 ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली है। इससे पहले कांग्रेस उम्मीदवार निलेश कुंभाणी और सुरेश पडसाला के नामांकन रद्द कर दिए गए थे। देश में 1951 से लेकर वर्ष 2019 में तक हुए 17 बार लोकसभा चुनाव में पहली बार कोई उम्मीदवार निर्विरोध विजयी घोषित किया गया है। इस तरह भाजपा को वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में पहली सीट सूरत से मिली है। सूरत लोकसभा सीट के लिए भाजपा के मुकेश दलाल समेत 9 लोगों के नामांकन मान्य घोषित किए गए थे। नाम वापस लेने के अंतिम दिन सोमवार को मुकेश दलाल को छोड़कर बाकी के सभी 8 उम्मीदवारों ने अपने नाम वापस ले लिए।

नगर निगम के लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ चलाएंगे आंदोलन

उज्जैर। उज्जैन शहर में जल संकट को देखते हुए जलकर विभाग के अधिकारियों के खिलाफ आंदोलन चलाया जाएगा। जिनकी गलती से पूरा शहर जल संकट झेल रहा है। प्रत्येक साल गंभीर में पीने का पानी पर्याप्त रहता है लेकिन अधिकारी की सेटिंग से जमीन मालिक खेत के अंदर पाइपलाइन के माध्यम से पानी चोरी कर रहा है और अधिकारी उनसे मिले हुए हैं।

प्रत्येक बिघा में एक क्विंटल गांव से लेते हैं। गंभीर नदी में खुलेआम अवैध उपकरण का कारोबार चलता है। जिससे पानी की दिक्कत है। उज्जैन शहर की लाखों जनता को भीषण गर्मी में जल संकट झेलना पड़ रहा है। गौ रक्षा न्यास द्वारा 3 महीने पहले ज्ञापन देकर अवगत कराया जा चुका था फिर भी अधिकारियों ने कोई कार्रवाई नहीं की। उक्त प्रस्ताव मप्र युवा शिवसेना गौ रक्षा न्यास की प्रांतीय कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक में पास किया गया। संस्थापक अध्यक्ष मनीषसिंह चौहान के नेतृत्व में हुई बैठक में मुख्य अतिथि दिल्ली से पधारी समाजसेविका नीतू सिंहजी, जूना अखाड़े के श्रीमहंत विजयजी भारती, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा राष्ट्रीय महामंत्री शिव सिंह परिहार, वरिष्ठ समाजसेविका मानसिंह तोमर जबलपुर व हेमलता तोमर की अध्यक्षता में बैठक हुई। साथ ही गोरक्षा न्यास की प्रदेश कार्यकारिणी का गठन किया गया।

जिसमें प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष के तौर पर हरि माली, प्रदेश उपाध्यक्ष लखन बाथम, कृष्ण कुमावत, देवेंद्र सिंह हिंदू, जबलपुर प्रदेश महामंत्री राहुल मुणावत, प्रदेश संगठन मंत्री मुकेश कुमावत, प्रदेश उप संगठन मंत्री सोनू यादव, प्रदेश मीडिया प्रभारी पवन बारोलिया, प्रदेश विधिक सलाहकार हरीश राठौर, प्रदेश सचिव राजेश पांचाल, कैलाश चावड़ा, उपसचिव मुकेश कुशवाह, प्रदेश मंत्री दारा सिंह चौहान, फूलकदम पहलवान, प्रदेश प्रवक्ता राजेश देसाई आगर, सुरेश जैन नागदा निर्वाचित किए।

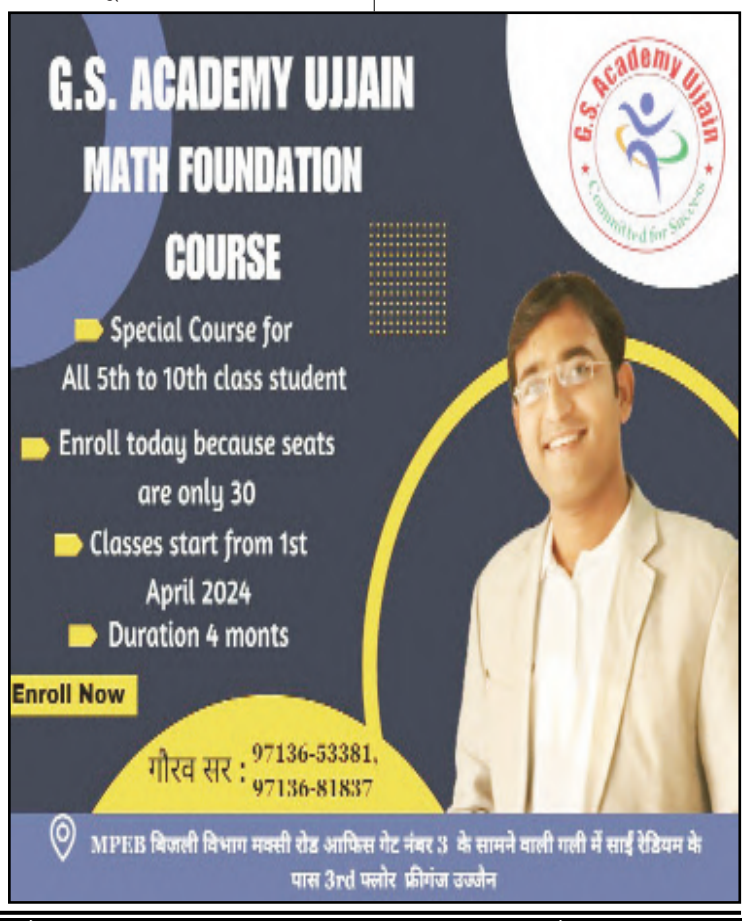

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नत्रक्ष के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।
● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)